(c) whether any review of the employment policy has been recently done or is proposed to be done; and

(d) what is the number of employees against whom action for corruption has been taken during the last three years?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COAL (SHRI AJIT KUMAR PANJA): (a) to (d) Information is being collected and will be laid on the Table of the House.

Ghost workers on the rolls of Coal India Limited

2320. SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Coal India Limited has identified 9,000 ghost workers on its rolls;

(b) if so, the details thereof; and

(c) what measures have been taken to curb this practice?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COAL (SHRI AJIT KUMAR PANJA): (a) and (b) No, Sir. However, the following subsidiary companies of Coal India Limited had a few cases of fake employees as detailed below:

Bharat Coking Coal Limited

23 persons who were issued offer of employment in Bhalgora areas in September, 1991 were not genuine. They were accordigly denied actual employment.

Western Coalfields Limited

A complaint received on 20-3-92 alleged that some persons out of 31 who were offered re-employment in Kanhan Area in terms of a Tribunal Award were imposters. State Government authorities investigated the complaint and as per their advice, services of 17 imposters were discontinued.

Eastern Coalfields Limited

Manpower audit in Eastern Coalfields Limited revealed that 95 persons of bankola Area, 6 persons of Satgram Area, 10 persons of Kajora Area and 24 persons of Salanpur Area had abandoned their jobs long ago but their names were continuing on the rolls of the company. All the cases were detected without any loss to Coal India.

(c) Coal India Limited and its subsidiary companies have taken the following steps to eliminate any possibility of existing and continuance of ghost workers:

(i) Issue of tamper proof identity cards to each and every worker;

(ii) Payment of wages through banks;

(iii) Periodical manpower audit; and

(iv) Disciplinary action on the identified long absentees.

जारंगडीह कोयला खान में कदाचार

2321. **श्री अनन्तरायम देवशंकर दवे :** क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) क्या यह सच है कि सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड द्वारा कथारा क्षेत्र स्थित जारंगडीह कोयला खान से स्पात और विद्युत उद्योगों को घटिया किस्म का कोयला सप्लाई किया जा रहा है जबकि इस कोयला क्षेत्र के अधिकारियों द्वारा निजी खरीददारों को अच्छी किस्म का कोयला दिया जा रहा है और घस देने पर इसकी स्थानीय बिक्री भी की जाती है ;

(ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान इस कोयला क्षेत्र का वार्षिक उत्पादन इसकी कुल उत्पादन क्षमता का कितने प्रतिशत है, और इसकी वर्षवार उत्पादन लागत और अर्जित लाभ कितना-कितना है ;

(ग) क्या यह सच है कि पत्थर मिश्रित कोयले के उपयोग से उक्त इस्जात और विद्युत उद्योगों को भारी नुकसान हो रहा है, यदि हां, तो उन्हें कितना नुकसान हुआ है; और

(घ) इस कदाचार से लिप्त व्यक्तियों के नाम क्या हैं और उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई है तथा इस कदाचार को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं ?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा) : (क) और (ग) कोल इंडिया लि० ने इस आरोप का खंडन किया है कि सेंट्रल कोलफील्डस लि० की जारंगडी कोलियरी ने अच्छे गुणवत्ता वाले कोयले का निजी उद्यमियों को अपवर्तन किया है तथा साथ ही इस्पात एवं विद्युत गृहों को खराब गुणवत्ता वाले कोयले की आपूर्ति की है। उन्होंने इस बात से भी इंकार किया है कि कोयले में मिले पत्थरों का इस्तेमाल किए जाने से उपर्युक्त उपभोक्ताओं को भारी हानि उठानी पड़ी है।

कोयला प्राकृतिक रूप में कोयला, कंकड़ पत्थर, शैली कोल आदि की अन्तरीय धंसाव वाली परतों में पाया जाता है तथा कोयले को उत्खनन तथा रख-रखाव की प्रक्रियाओं में पूर्ण रूप से पत्थरों, कंकड़ों, आदि से पृथक करना संभव नहीं है। लेकिन कोयले को वैगनों में लदान से पूर्व उसे उठाए जा सकने वाले पत्थरों के टुकड़ों से पृथक करने का प्रत्येक संभव प्रयास किया जाता है। विभिन्न विद्युत गृहों का प्रेषण किए जाने वाले कोयले में, जो पत्थरों की मात्रा मिली रहती है, उसकी प्रतिशतता नगण्य होती है। इस मात्रा का कोयले की गुणवत्ता पर प्रभाव लदान स्थल पर कोयले का नमूना तथा विश्लेषण करते समय प्रतिबिंबित होता है, अतः संबंधित विद्युत गृहों की कोयले के ग्रेड में पाई गई किसी तरह की कमी की पूर्ण रूप से प्रतिपूर्ति की जाती है। अतः इस कारण से विद्युत उपयोगिताओं को कोई हानि नहीं होती। इस्पात संयंत्रों को कोयले की आमतौर पर आपूर्ति धुलाई के पश्चात् ही की जाती है, अतः कोयले के साथ पत्थरों के प्रेषण की कोई संभावना नहीं होती है और इस तरह से इस्पात संयंत्रों को हानि नहीं उठानी पड़ती।

(ख) जारंगडीह कोलियरी के पिछले तीन वर्ष के दौरान कोयले के लक्ष्य, वास्तविक उत्पादन तथा उसके द्वारा प्राप्त की गई प्रतिशतता तथा उनकी उत्पादन लागत तथा लाभ का ब्यौरा निम्न है :—

वर्ष	लक्ष्य ('000 टन में)	वास्तविक उत्पादन	प्रतिशत उपलब्धि	लागत (प्रति टन रु० में)	लाभ
1989-90	610	1013	166	209.36	1.11
1990-91	830	935	113	234.29	48.04
1991-92	875	1001	114	242.52	40.26